JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मीरा की भक्ति भावना

दीपावली देवी, एक्सटेंशन लेक्चरर, हिंदी विभाग

राजकीय नेशनल महाविद्यालय, सिरसा ,हरियाणा।

Deepawalisujal123@gmail.com, Contact:-9812528404

सारांश:-

मीरा मध्यकालीन भक्त कवयित्री है। मीरा की रचनाओं में भक्ति भावना उनकी विरह भावना से अभिन्न है। मीरा और कृष्ण के मध्य जो भावनात्मक संबंध था, वही मीरा की प्रेम भक्ति थी । उनकी कविता में भी भक्ति भावना अभिव्यक्त हुई है और उनके प्रेम का आलंबन श्री कृष्ण थे ।

भूमिका:-

मीरा राजस्थान के मेवाड़ राजघराने की वधू और मेड़ता के राजघराने की बेटी थी । राजपूताना में महिलाओं की आजादी पर बंधन था और पति की मृत्यु के बाद भी पत्नी को आमतौर पर पति की चिता में कूदकर सती होने की प्रथा थी ।मीरा क्रांतिकारी विचारों वाली महिला थी और इस बंधन को स्वीकार नहीं करती। मीरा राज महल की चारदीवारी से बाहर आकर कृष्ण की प्रेम भक्ति में लीन हो गई। वह श्री कृष्णा को प्रसन्न करने के लिए श्रृंगार भी करने लगी मीरा का देवर राणा और मीरा का परिवार मीरा से रुष्ट हुआ और मारने के लिए विष का प्याला भेजा। मीरा हर कदम पर परेशान रही और जीवन का दर्द झेलते हुए वह भक्ति में लीन हो गई और परिवार के सदस्य उन्हें कुलनाशिनी कहने लगे। मीरा की भक्ति में वेदना छुपी हुई थी।

अध्ययन का उद्देश्य:-

मध्यकालीन भक्त कवयित्री मीरा को जो स्थान मिलना चाहिए था, वह उन्हें नहीं मिल सका। जो भक्ति मीरा ने व्यक्त की है वह अन्य किसी ने व्यक्त नहीं की। मीरा ने समस्या मूलक प्रेम का चित्रण किया। मीरा के जीवन की अनंत कठिनाइयां उनके काव्य में देखने को मिलती हैं।

नारद भक्ति सूत्र :-

नारद भक्ति सूत्र में भक्ति को द्विधा कहा गया है:-

(1). प्रेमरूपी भक्ति

(2). गौणी भक्ति

1. प्रेमा रूपी भक्ति में डूबकर मीरा पूर्ण तथा गिरधर दीवानी हो गई और सांसारिक राग को त्याग दिया था। इस भक्ति में डूबकर मीरा प्रेम रूपा हो गई थी और तृप्त हो गई थी यह मीरा के गीतों में भी ध्वनित होता है।

कबरी ठाढ़ी पंथ निहारा अपने भवन खड़ी

मीरा की पदावली इसमें मीरा कृष्ण से मिलने के लिए आतुर है। भक्ति के कारण ही मीरा सामाजिक है।

(2). गौणी भक्ति:- मीरा की भक्ति में गौणी भक्ति कम ही देखने को मिलती है। मीरा में सात्विक गौणी भक्ति देखने को ज्यादा मिलती है।

"मीरा के प्रभु कब रे मिलेगा थे बिन रहा न जाए।"

मीरा के लिए गिरधर ही सब कुछ है। मीरा की एकमात्र इच्छा भी कृष्ण की भक्ति करने की भक्ति करने की है।

शोध पद्धति:- मीरा से संबंधित विभिन्न पुस्तकों, लेखों तथा पुस्तकालय से सामग्री एकत्रित की गई और उसका अध्ययन किया गया है। कृष्ण भक्त संतों से भी संपर्क कर सामग्री प्राप्त की गई है।

मुख्य विषय:- मीरा की भक्ति को किसी एक परंपरा के अंतर्गत नहीं रखा जाना चाहिए। मीरा की भक्ति को तत्कालीन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखना चाहिए।

ताकि नारी जाति को जकड़ी गई बेड़ियों से स्वतंत्र करवाया जा सके। मीरा का प्रेम अलौकिक होते हुए भी लौकिक है उन्होंने अपने जीवन के पीड़ा के अलावा कुछ भी नहीं देखा है। इसलिए उसे जीने के लिए भक्ति की आवश्यकता पड़ी।सात्विक भक्ति के अंतर्गत मीरा को अपने समस्त कर्म फल को भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया गया।

मीरा की नवधा भक्ति:- इस भक्ती के अंतर्गत श्रवण, कीर्तन, ईश्वर, स्मरण, अर्चन, वंदना, दास्यभक्ति, सखा भाव तथा आत्म निवेदन भक्ति इन्हीं 9 प्रकार की भक्ति होती है। कुछ विद्वानों का मानना है कि मीरा की सगुणोपासना संबंधी पद किस परंपरा में आते हैं, यह अलग शोध का विषय है। परंतु इतना स्पष्ट है कि मीरा के कृष्ण अवतारी हैं। उन्होंने द्रोपदी की लाज बचाई थी।

मन रे परसी हरी के चरण

सुभाग शीतल कमल कोमल

त्रिविध ज्वालाहरण

जिन चरण ध्रुव अटल किन्ही रख अपनी शरण

जिन चरण ब्रह्माण भेद्यो नख शिखा सिर धरण

जिन चरण प्रभु परसी लीन्हे करी गौतम करण

जिन चरण फनी नाग नाथ्यो गोप लीला करण

जिन चरण गोबर्धन धर्यो गर्व माधव हरण

दासी मीरा लाल गिरीधर आगम तारण तारण

मीरा मगन भाई

लिसतें तो मीरा मगनभाई

मीराबाई की कविता की विशेषता है मार्मिक संवेदना और सच्ची अनुभूति। मीरा को दर्द दीवानी भी कहा जाता है। मीरा की वेदना आत्मा के तारों को झकझोर देती है।

पायो जी मैंने राम रतन धन पायो..

वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु किरपा करि अपनायो। पायो जी मैंने...

जनम जनम की पूंजी पाई जग में सभी खोवायो। पायो जी मैंने...

खरचै न खूटै चोर न लूटै दिन दिन बढ़त सवायो। पायो जी मैंने...

सत की नाव खेवटिया सतगुरु भवसागर तर आयो। पायो जी मैंने...

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरष हरष जस गायो।पायो जी मैंने...

प्रासांगिकता:-

आज का समाज भक्ति भावना के प्रसंग से कोसों दूर है।महात्माओं और संतों ने भक्ति का व्यवसायीकरण कर रखा है। इसी कारण मीरा की प्रासंगिकता बढ़ गई है।

मध्यकालीन भारतीय नारी की व्यथा को मीरा की भक्ति भावना में व्यक्त किया गया है और मीरा के सामने भाव जगत से अधिक भौतिक जगत की चुनौतियाँ वह परिवार के लोगों का साथ न देना सबसे बड़ी परेशानी थी। कबीर, जायसी और सूर के सामने चुनौतियाँ भाव जगत की थी। मीरा एक तो राजपूत की बेटी और दूसरी तरफ विधवा थी। मीरा अपने प्रभु से हाथ जोड़ कर कहती है कि मैं तुम्हारी दासी हूं। कृपया करके मुझे जन्म-मरण के चक्र से मुक्त दिलावाओ। मीराबाई कृष्ण को प्राप्त करने के लिए बड़े जतन करती है।

आधुनिक काल में मीरा की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है और समाज में विभिन्न प्रकारों की समस्याएं नारी के सामने आती हैं।

निष्कर्ष:- मीरा की भक्ति भावना पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि मीरा के गीतों में नवधा भक्ति के सभी अंग उपलब्ध होते हैं। अपितु स्वमेव उनके गीतों में नवधा भक्ति के सभी अंग सम्मिलित हो गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. हिंदी गीतिकाव्य परंपरा और मीरा संख्या डॉ मंजू तिवारी पृष्ठ संख्या 132,133,139 ।

2. मीरा का काव्य:- डॉक्टर विश्वनाथ त्रिपाठी पृष्ठ संख्या 86,57 और 72 ।

3. स्त्री चेतना और मीरा का काव्य:- पूनम कुमारी पृष्ठ संख्या 97, 98, 205, 107 ।

4. इकनोमिक एंड पॉलीटिकल वीकली कुमकुम सांगरी (7 से 14) पृष्ठ संख्या 1468 ।